दिनांक 11 अक्तूबर, 1985

सं० स्रो० वि०/रोहतक/159-85/42057.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० कपूर इलैक्ट्रोडस प्रा० लि०, बहादुरगढ़ के श्रमिक श्री ज्वाला सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई स्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, अब औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-1-अम/78-32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवाद प्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या उक्त विवाद से मुसंगत या सम्बन्दित मामला है :--

क्या श्री ज्वाला सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो० वि०/सोनीपत/146-85/42064.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० एवन स्केल कम्पनी, ई-33, इण्डस्ट्रीयल एरिया, सोनीपत के श्रमिक श्री भोज राज तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित सामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, ग्रब ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 9641—1—शम/78—32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ प्रिति सरकारी ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त श्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री भोज राज की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठींक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ग्रो० वि०/रोहतक/74-85/42079.—चूंकि हिर्याणा के राज्यपाल की राये है कि उप निर्देशक, कृषि विभाग, हिरियाणा, रोहतक, के अभिकं श्री राम चन्द्र तथा उस के प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

भीर चूँकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रंब, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रिघिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रुं ग्रिघिसूचना सं • 9641-1-श्रम/78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी ग्रिघिसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रिम न्यायालय, रोहतक को विवाद-ग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक बीच या तो विवादग्रस्त मामला है उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राम चन्द्र की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो॰ वि०/रोहतक/ध-85/42093.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै॰ वैश्य कालेज, रोहतक, के श्रमिक श्री बचन सिंह रावत तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इस के बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, श्रव श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम 1947की धारा 10की उपधारा (1) के खिण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं० 9641-1-श्रम/78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रिधिसूचना की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखत मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु ¦निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उवत विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री बचन सिंह रावत की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहल का हकदार है ?

दिनांक 15 श्रक्तूबर, 1985

सं श्रो वि । रोहतक / 60-85 / 42290 — चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं वि हिन्दुस्तान नेशनल ग्लास एण्ड इण्डस्ट्रीज बहादुरगढ़ा, के श्रमिक श्री राम किशन तथा उसके श्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चंकि हरियाणा के राज्य पाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा कि राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं० 9641-1-श्रम 78/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिन्ण्य एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राम किशन की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठोक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो॰ वि॰/रोहतक/73-85/42297 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं॰ उप-निर्देशक, कृषि विभाग, रोहतक के श्रमिक श्री जय सिंह तथा उसके प्रवन्धकों बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, ग्रब गाँचोगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी ग्रधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय निर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री जय सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

मं० ग्रो० वि०/रोहतक/147-85/42304 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० मैनेजर लेखी कैमीकल प्राईवेट लि० एम० ग्राई० ई०, बहादुरगढ़ के श्रमिक श्री सुरेण कुमार दास तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीझोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के, राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निदिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, अव अधिगिक विवाद अधिनियम 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई अवितयों का प्रयोग करते हुए हिरयाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-1-अम/78/32573, दिनांक 6 नवम्बर 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित अभ न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचार तीन मास में देने हेतू निदिष्ट करते हैं जो कि उनत प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उनत विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

बया श्री सुरेश कुमार देवास की है सेवाओं का समापनायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह राहत का हकदार है ? सं अो वि /रोहतक 153-85/42311 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं वै टैकमा इन्डिया लिं के बहादुरगढ़, के श्रमिक श्री वेद प्रकाश तथा इसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

श्रिपेर चूंकि हरियाणा के हिराज्यपाल विवाद को न्याय निर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसं लिए, अव अधिमान विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 9641-1-अम/78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित अस न्यायालय रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय निर्णय एवं पंचाट तीन भास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उनत प्रवन्धकों तथा अभिक के बीच य तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद के मुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री वेद प्रकाश की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?